✡ श्रीसीतारामचन्द्राभ्यां नमः ✡

❀ श्रीमते भगवते रामानन्दाचार्याय नमः ❀

।। श्रीहनुमते नमः ।।

।। श्रीसद्गुरवे नमः ।।

।। श्रीमती चन्द्रकलायै नमः ।।

।। श्रीमती चारूशीलायै नमः ।।

श्रीसीताराम उत्कण्ठा प्रकाश

ध्यान मंजरी, उज्जवल उत्कण्ठा,
जुगलोत्कण्ठा प्रकाशिका, विनय चालीसी,
नेह प्रकाश, सन्त विनय शतक

प्रकाशक:—
वैदेही बल्लभ शरण जी
श्रीहनुमानबाग, वासुदेवघाट, श्रीअयोध्याजी

प्रथम बार १०००) सन् २००० (मूल्य १२ रुपये

श्रीजुगलोत्कण्ठा प्रकाशिका

विनय-माला

॥ रसिक उरहार ॥

॥ सोरठा ॥

"रूपसरस" सुखखानि, प्रियप्रीतम की लाड़ली ।
"शुभशीला" सुखदानि, पाद-मंजु पंकज अली ॥१
"चारुशिला" ! प्रतिपाल, शरणागत की हो सदा ।
तुम बिन सियवरलाल, कबहुँ नहीं आनन्ददा ॥२

॥ दोहा ॥

परिकरि युत श्रीस्वामिनी, सुख बिबर्धनी साथ ।
हमको दीजे सुख सदा, अब गहि लीजे हाथ ॥३
पद पंकज देखे बिना, बृथा जन्म जग जात ।
सीतावर युत मिलहु अब, छिन पल कलप बिहात ॥४
हे सीते नृप नन्दिनी, हे रघुराज कुमार ।
तुम बिनु व्याकुल चितरहत, रही न नेकु सम्हार ॥५
असन बसन कुलकानतजि, सब से भई उदास ।
बिरह अग्नि बाढ़त भई, तापै पवन उसांस ॥६
ताहू पर घृत परत है, टपकत नयनन नीर ।
बुझत नहीं बाढ़त अधिक, को जानै यह पीर ॥७

गृह बाहर बन में फिरूँ, कहूँ न चित ठहराय ।
जहँ तहँ जिय घबरात है, अब दुख सहो न जाय ।।८

नैन मूँदि कबहूँ रहौं, बैठी गृह एकंत ।
सूरति कौ अनुभव करौं, खोले फिर बिलपंत ।।९

तापर फिर लीला रचित, चित अवलम्बन हेत ।
प्रिय प्रीतम की कांति वह, कछु सीतल कर देत ।।१०

तदपि चित्त माने नहीं, बिरह ज्वाल के जोर ।
घन बिजुली सम दर्श दो, श्यामल गौर किशोर ।।११

बदन माधुरी गर्ज रव, बचनामृत युत पीर ।
बिरह अग्नि बूझे जबहिं, मिलन वर्ष हो नीर ।।१२

हे बिधु बदनी जानकी ! हे सीतावर श्याम !
कब दिखाइहो बिधु बदन, पद पंकज अभिराम ।।१३

दृग चकोर मन भ्रमर ह्वैहैं, रसना चातृक नाम ।
कब देखें प्रीतम प्रिया, सुख बिलास के धाम ।।१४

कबहुँ कि वह दिन होयगो, प्रिय प्रीतम के संग ।
भाव सहित अवलोकिहौं, जिमि चकोर परसङ्ग ।।१५

पद पंकज की माधुरी, मन मधुकर ह्वैहै लीन ।
मिलन विना व्याकुल रहत, बिरह ब्यथा तन छीन ।।१६

हे श्रीसीते स्वामिनी ! रसना रटत सुनाम ।
चातक सम गति हो रही, सुनिये करुणाधाम ।।१७

दृगन छबीली छबि बसी, जल समुद्र जिमि मीन ।
ताहि बिलग मतिकीजिए, हो तुम परम प्रबीन ॥१८

बिथा होत जिमि मीन के, बिछुरे प्रीतम नीर ।
तैसी गति मम देखि कै, कृपा करहु रघुबीर ॥१९

देखत जग मैं मधुरता, सुन्दरि सुन्दर रूप ।
तन ब्याकुल ह्वै जातबिन, देखे रूप अनूप ॥२०

रूप अनूप दिखाय कै, कीजै नैन सनाथ ।
अछत नाथ अस क्योंकरो, देउ प्रिया को साथ ॥२१

सुनि कोकिलकी कुहुक मृदु, उठत हिये में हूक ।
सिसिक-२ कर मीजती, क्षमा करो अब चूक ॥२२

हम तो सब औगुन भरी, तुम हौ गुणकी खानि ।
गुनन आपने रीझिये, बिरदावलि उर आनि ॥२३

नटत मयूरी देखि कै, बिरह सतावै मोय ।
केकि कंठ तन की सुदुति, लखि-भुज मन-भ्रम होय ॥२४

कब भ्रम तुम यह मेटिहौ, हे नृपराजकिशोर ।
गलबाही दीन्हे लखै, गौर श्याम चितचोर ॥२५

देखत नृप तनया जगत, प्राकृत राजकुमार ।
मिलिहो हमसे कबहुँ अस, जस लौकिक व्योहार ॥२६

सब जग अपने मित्र युत, सुख भोगत दिन रैन ।
हमकोदुख दिनप्रतिअधिक, छिन पल कबहुँ न चैन ॥२७

हे सीते करुणा अयन, जतन बनत नहिं एक।
केवल कृपा कटाक्ष को, चातक कीसी टेक ।।२८

स्वाति-बून्द पिययुत मिलन, मेरे जी की आस।
पूरण कबहूँ कीजियो, जबलौं घट में स्वांस ।।२९

और कृपा कर दीजियो, जब लग तन में प्रान।
प्राणनाथयुत नाम तब, रटो छोड़ि अभिमान ।।३०

चातक रटि घटि जाव भल, घटे न मेरो नेह।
चरण कमल मकरंद की, दृढ़ भौरी करि लेह ।।३१

बिरह तपावै मोहिं ज्यों, बाढ़े अधिक सनेह।
जैसे कुन्दन के तपै, निरमल होवै देह ।।३२

काम क्रोध मद लोभ ये, जग में करे सनेह।
तव सनेह के रिपु अहैं, नेकु न परसे देह ।।३३

अरुण प्रीति छबि घटा की, अटा बिलोकी जाय।
अँसुवन झर बरसन लगी, तन सब दई भिजाय ।।३४

भई शिथिल नहिं चलसकै, सीतल स्वांस समीर।
तन कँपाय ब्याकुल करी, बेगि मिलो रघुबीर ।।३५

बहुबिधि भूषण नगजड़ित, देखि चढ़त है पीर।
कब पहिरैहौं निज करन, सुन्दर श्याम सरीर ।।३६

बसन अमौलिक देखि कैं, मन न धरत है धीर।
प्रिय प्रीतम के योग यह, मणिन जड़ित है चीर ।।३७

रुचि-२ बसन सम्हार तन, कब पहिनैहौं पीय ।
कोमल पुहुपहु ते अधिक, तन सुन्दर कमनीय ॥३८
अंग सुगंध बहु बिधि धरे, मणिन पात्र रमणीय ।
पिय प्यारी के उर लसैं, सुफल होय तब जीय ॥३९
राज साज साहित्य युत, सब परिकर लिय संग ।
निसि दिन बिहरैंगे कबहुँ, महलनि कुंज अभंग ॥४०
बन विनोद क्रीड़ा ललित, सांझ सबेरे बाग ।
कब देखैंगे नैन यह, जगिहैं हमरो भाग ॥४१
फूल बटिका महल की, बिहरत युगल किशोर ।
कबहुँ कि यह छबि देखिहौं, मनहरनी चितचोर ॥४२
जलविहार सरयू सलिल, करत सखीनयुत लाल ।
कब देखैं झीने बसन, चिपट रहे छबि जाल ॥४३
कबहुँ परस्पर प्रीतिबस, अरस परस शृङ्गार ।
करत देखिहौं प्राणपति, महलनि कुंज मझार ॥४४
रचि सिङ्गार दोऊ खड़े, दै हित सो गलबांहि ।
कोटि रतन तब वारिहों, तन मन से बलि जांहि ॥४५
बिविध भोग उपभोग के, सौंज अनेकन रीति ।
कब देखैं जीवत युगल, भरे प्रेम अरु प्रीति ॥४६
हे प्यारी ! कब देखिहौं, कर कमलन में ग्रास ।
परिकरयुत तुम जेंवती, पिय सँग भरी हुलास ॥४७

थाल शेष कर कमल करि, अधर सुधा रस पर्स ।
कब प्रसाद हमको मिलै, मिटिहैं रसना तर्स ।।४८

फिर बीड़ी सौरभ रली, हँसि लैहौं मुख कंजु ।
अतर लगा साफल्य ह्वै, कब मेरे कर मंजु ।।४९

युगल सहचरी संग में; दुज निन्दक मुखचंद ।
सभा सदन कब देखि हौं, पैहौं परम अनन्द ।।५०

सियपिय सहचरि संग में, चन्द्रमुखी बहु बाम ।
चन्द्रबदन चन्द्रानना, रूपलता सुखधाम ।।५१

हेमलता हेमांगिनी, कनकलता कनकंग ।
पिकवयनी मृगलोचनी, सुन्दरि, रामा संग । ५२

लता सिंगार युगल प्रिय, सखी सुशील किशोरि ।
नारि संग अगणित खड़ी, जैसे चन्द्र चकोरि । ५३

रूप नदी सी बहि रही, आवैं झुण्डन संग ।
सभा सदन में भरत हैं, मिलि समुद्र जिमि गंग ।।५४

रूपलतिका सम फबि रही, किती झरोखन जाल ।
सियपिय मुख राका ससी, लखि छबि भई निहाल ।।५५

सुमनलता कर कमल में, लीने पुष्पन साज ।
चवँर मोरछल कोउ करैं; पानदान कर छाज ।।५६

छत्र, अत्र; पुष्पन रचित, बल्लभ, छरी अनेक ।
ध्वज, पताक, साहित्य सब, लीने जथा विबेक ।।५७

अपने अपने थल खड़ी; लखती रूप अनूप।
युगल माधुरी देखि कै, डूब रही रस कूप ॥५८

गान तान बादित्र बहु, रंभादिक के नृत्य।
सिय पिय सनमुख हो रहे, मौज पाय कृत कृत्य ॥५९

चारुसिला लगि कान से, बातें कछू करंत।
रूप सर्स कर बांटती, वीड़ा अतर लसंत ॥६०

सुख बिबर्धनी कर लिये, अतरदान बहु मोल।
शुभलीला कछु समयलखि, बिनय करै मृदु बोल ॥६१

कब देखौं वह माधुरी, जनक लाड़िली संग।
प्रीतम हित बतियां करत, उर अति मोद उमंग ॥६२

सुरति बिहार बहार की, बातैं अलिन समाज।
सुनि सकोच दृग लाड़िली, देखहि बदन सलाज ॥६३

यह छबि मुग्धा दशा की, कही कौन पै जाय।
जिहि देखे बिन जगत में, आयू बृथा सिराय ॥६४

लपट सुगंधन की उठत, चित उचाट हो जात।
जगत उदासी होति है, दवी बिरह लपटात ॥६५

प्रीतम अंग सुगंध को, तरस उठत है जीय।
स्वांस गंध युत माधुरी, याद करावत पीय ॥६६

करत परस्पर बारता, श्री स्वामिनी सहेत।
कब लैहैं यह नासिका, मुख सुबास सुख केत ॥६७

कोटि सुगँधनिकी जननि, प्रीतम अंग सुबास।
सीतापति अंभोज मुख, मिलत लसै सुखरास ॥६८

कबहुंकि वह दिन होयगो, जनकलली के पास।
चेरी ह्वै नेरी रहौं, लैहौं अङ्ग सुबास ॥६९

राग तान सब जगत के बिरह बढ़ावन हार।
तुम बिन हे सिय स्वामिनी, ह्वै करौंत सितार ॥७०

राग रास मंडल रचै, श्री महाराजकुमार।
श्रवन कवहुँ वह सुनौंगी, जनकसुता सुकुमार ॥७१

ब्रह्मादिक की गति नहीं, सुनैं आय मुख राग।
चेरी तन धारे बिना, दूर महल अरु बाग ॥७२

नूपुर भूषण झमक धुनि, श्रवन सुनै कब मोर।
जिहिं धुनि संग चितवत रहों, श्री रघुराज किशोर ॥७३

कब लखि हैं नख माधुरी, पद पंकज दृग मोर।
जिन ससि को तरसत रहैं, मुनि गन भये चकोर ॥७४

केवल कृपा कटाक्ष से, तिनके दरशन होय।
शरणागत प्रतिपाल हो, मोंहि भरोसो सोय ॥७५

परम अलौकिक राग वह, पद अनुरागी भोग।
बीणा युत कव श्रवन में, परिहैं जीवन जोग ॥७६

मधुर शील कोमल ललित, नेह भरे वह बोल।
श्रवनन में कब सुनौंगी, रले सुगंध अमोल ॥७७

हे नृप नन्दिनी लाड़िली, प्यारी राजकिशोरि ।
रास माधुरी देखि हैं, जैसे चन्द्र चकोरि ।।७८

शरद रैन के चन्द्रमा, बहुत कठिन दुख देत ।
तुम बिन विष सम श्रवत है, कुंजन महल निकेत ।।७९

बिरह विथा बाढ़ी अधिक, लखिकै चन्द्र प्रकाश ।
स्वांस-२ प्रति कठिन है, लगी मिलन की आस ।।८०

बेगि मिलहु करुणा अयन, मति कठोर चित होव ।
अस सुभाव नहिं रावरो, कृपा दृष्टि से जोव ।।८१

बालपनै शरणै लई, तब तो नहिं कछु बोध ।
बोध भये कस दूर अब, तन मन से लो सोध ।।८२

तुमसे बिमुखी होइ कै, भटकी जन्म अनेक ।
सो दुख आपहि देखि कै, दीनों मोहि बिबेक ।।८३

दै बिबेक अपनाय कै, शरणै लई कृपाल ।
शरणागत प्रतिपाल तुम, मोको करो निहाल ।।८४

सरद रैनि की चांदनी, बिरहत युगलकिशोर ।
नृत्य सहित दंपति लखै, सखि मंडलि चहुँ ओर ।।८५

करैं मान जब लाड़िली, प्रीति बिबश तुम सङ्ग ।
कब मनाय सिय स्वामिनी, आन बटाऊँ रङ्ग ।।८६

यह सेवा सुख देउगी, अनुचरि आपनि जान ।
हे सीते मम स्वामिनी, तुम बिन गतिनहिंआन ।।८७

कब दिखाइहौ मान छबि, रास मण्डली ऐन ।
मुरक चलन तिरछी नजर, पिय तन चितवन नैन ॥८८

बहुरि मान को छोड़ि कै, प्रीतम उर उमगाय ।
मिलत देखिहैं नैन यह, जन्म सुफल हो जाय ॥८९

रास श्रमित मुखस्वेदकन, प्यारी तन झलकंत ।
करिहौं कब पंखा पवन, हरिहौं श्रम हुलसंत ॥९०

सैन कुंज पुनि गवन करि, करिहो सखिन निहाल ।
सो छबि कब हम देखिहौं, प्रीतम संग रसाल ॥९१

मिल बिलसत प्रीतम प्रिया, फँसे रूप छबि जाल ।
तन मन से अंगन रमे, प्रेम छके रस चाल ॥९२

बातैं केलि कलान की, शील सकुचि दृग लाज ।
कब देखौंगी दृगन हम, रस बस रस के काज ॥९३

रस माते रस पान कर, रस राते तव नैन ।
रस छाके रसकेलि में, नैन मते छबि मैन ॥९४

नैनन लखि छकि हैं कबै, मैन छकी दृग सैन ।
नैन पलक लागै नहीं, मुख से बनै न बैन ॥९५

यह जी की अभिलाख मम, पुरवो जनक दुलारि ।
कर सिर धर पुचकारिये, प्यारी राजकुमारि ॥९६

शरणागत प्रतिपाल तुम, शरणै आई जान ।
चेरी ह्वै नेरी रहूँ, चरण खवासिन मान ॥९७

कब हम देखौं लाड़िली, छकी छबीली कांत।
सिथिल बदन भूषण बसन, पिया केलि सुर तांत ॥९८

बिथुरी अलकैं बदन पर, मनहुँ व्याल छबि छीनि।
आय बसी रस पान को, परिकर मन डस लीनि ॥९९

सो समार है करन कब, हे श्री राजकुमारि।
कब लखिहैं बिधुबदन छबि, जीवन प्राण अधारि ।.१००

भूषन बसन सम्हारि हैं, सुंदरि सकल सुदेश।
पलक पीक कज्जल अधर, यह छबि लखैं हमेश ॥१०१

मुख अंचल सों पोंछि कैं, नैन सम्हारे रेख।
यह सेवा सुख भोग में, रहूँ चित्रवत देख ॥१०२

हे प्यारी सिय स्वामिनी, तुम बिन गति नहिं आन।
दासी को नहिं त्यागिये, गहो कमल कर मान ॥१०३

दासी जन्म अनेक में, सहे कलेस अलेख।
हे करुणाकर लाड़िली, दया दृष्टि अब पेख ॥१०४

जनक बंस अवतंस तुम, हम सी तुमें अनेक।
तुभ सी हम को एक हो, करिये हिये विबेक ॥१०५

बहुत काल बीते जगत, भ्रमत बिना पद कंजु।
अली रूप करि राखिये, पद पंकज की मंजु ॥१०६

हे करुणाकर जानकी, राम जानकीजान।
सब परिकर की जान तुम, हे मम जीवन प्रान ॥१०७

कब दिखाइहो महल सुख, पय पीवत रुचि रंग ।
श्री महाराजकिशोर युत, सयन समय की संग ।।१०८

अलिगन पान कराय के, सयन करत सुख दैन ।
प्रीतम संग पौढ़ी महल, लखि छबि छकिहैं नैन ।।१०९

चरणकमल सेवा करूँ, उर नैनन से लाय ।
मनहु दरिद्री जनम कौ, चिन्तामणि कर पाय ।।११०

तिहि सुख से सत कोटि गुन, मानै, मेरो हीय ।
मन वांछित यह दीजिये, पियकी जीवन जीय ।।१११

कबहुँकि वह दिन आइहै, प्रात समय करि कृत्य ।
"रूप सर्स" पग लागि अरु,'चारुशीलाजी' नित्य ।।११२

प्रीति सहित 'सुखबर्धनी', अपने परिकर युवत ।
सिय पिय महलनि जायगी, पहिने भूषन मुक्त ।।११३

गान नृत्य वादित्र युत, प्रीति भरी रस तान ।
दंपति जस की गाइहैं, जागो जीवन प्रान ।।११४

हे प्यारी नृपलाड़िली, श्री महराजकुमारि ।
आरत जन हम दरस को, झांकौ नैंन उघारि ।।११५

तुम बिन तलफत रैन सब, बीती चतुर सुजान ।
दृगन ओट नहिं कीजिये, हे मम जीवन प्रान ।।११६

चरण शरण में राखिये, चेरी नेरी मान ।
मान बड़ाई ना चहूँ, मम जीवन सुखखान ।।११७

लाल लाड़िली छबि छके, जागे महलनि कुंज।
कब यह छबि मैं देखिहौं, जगि हैं भाग सपुंज ॥११८

मंगल अमित सजायकै, मंगल भवन अनूप।
मंगलमय जब होय दिन, देखौं मंगल रूप ॥११९

सभा मंगला को मिलन, मंगल दिवस सुभूप।
मंगल बेला समय मैं, देखौं युगल स्वरूप ॥१२०

कोटि जन्म भटकत गये, संसृति सहत कलेस।
साधन करि-२ थक गये, धरे कौन नहिं भेस ॥१२१

करि करुणा अपनाय जब, गुरु ह्वै पकरी बांह।
चरण शरण में लै लई, हस्त कमल की छांह ॥१२२

जो जन अपनी शरण में, लीने युगल किशोर।
तिन सब सम में हौं नहीं, पतितन में सिरमोर ॥१२३

नाम पतितपावन जु तव, जग श्रुति में बिख्यात।
सोहू सुमिरन नहिं बने, तहु चाहत कुशलात ॥१२४

प्रणतपाल की रीति जो, वेद कहत हैं चार।
सो अवलंबन चित्त को, बेगिहि करो सम्हारि ॥१२५

कर्म बचन मन ते कहूँ, हे मिथिलेश किशोरि।
चरण कमल तजि रावरी, नहीं ठौर किहुँ ओरि ॥१२६

हे करुणाकरि लाड़िली, इतै मिमौ अब आय।
कै उतही में आ मिलूं, बेगहि लेहु बुलाय ॥१२७

चरण कमल तुमरे बिना, तलफत हौं दिन रैन ।
कहब लिखब नहिं बनत अब, थकित नैन अरु बैन ।।१२८

तन मनहू अब सिथिल है, बिरह ब्यापि गई पीर ।
कब देखौं छबि नैन भरि, स्यामल गौर शरीर ।।१२९

'बिनयमाल' दोहावली, "शुभसीला" की जान ।
उर धरि पावन कीजिये, मेरी जीवन प्रान ।।१३०

दोउ उर धरि मम उर बसो, बिरह बिथा के साथ ।
जब लगि करुणायुत नहीं, प्रगट गहो तुम हाथ ।।१३१

श्री सरयू श्री अवध तुम, रसिकनिवासी धाम ।
पवनसुवन परिकर अरज, बेगि कीजिये काम ।।१३२

परमारथ के रूप तुम, हम हैं स्वारथ भूप ।
जांचति द्वारे पै खड़ी, चाहैं सियबर रूप ।।१३३

आन द्वार जाचौं नहीं, दीजो यह दृढ़ नेम ।
मेरी ओर निबाहियो, सीतापति पद प्रेम ।।१३४

भक्ति दान पाऊँ बहुरि, अमल अनूपम नित्त ।
देत रहौ अहलाद युत, लगन लालची चित्त ।।१३५

"शुभशीला" लीला ललित, प्रीतम प्रिया बिहार ।
युगलोत्कंठ प्रकाशिका, अनुरागी उरहार ।।१३६

इति श्रीयुगलोत्कंठा प्रकाशिका सम्पूर्णम्

श्री विनय चालीसी

॥ दोहा ॥

हे सीते नृप नंदिनी, हे रघुराज किशोर।
तुम विन तलफत हूँ सदा, कृपा करो मम ओर॥१
हे निमि बन्श उजागरी, हे रघुबर कुल भाँन।
कृपा करो जन जानके, मैं हूँ निपट अजाँन॥२
हे प्रीतम प्यारी सदा, हे प्रिय बल्लभ लाल।
चाहत कृपा कटाक्ष को, मेटौ भव के जाल॥३
कृपा रूपणीं जानकी, कृपा रूप रघुनाथ।
कृपा कटाक्ष निहारिये, राखो अपने साथ॥४
हे चन्द्र बदन मृग लोचनी, कमल नयन श्रीराम।
कृपा तुम्हारी चाहिये, बसिये मम उर धाम॥५
हे श्रीचारुशीला की स्वामिनी, रूपलता की प्रान।
रामलला की प्राण प्रिया, सदा रहो मम ध्यान॥६
भूम सुता हे लाड़ली, हे सियबर सुखदान।
तुम बिन जीवन है बृथा, कृपा करो सुख खान॥७
रघुबर प्यारी लाड़ली लाड़िली प्यारे राम।
कनकभवन की कुंजमें बिहरत हैं सुखधाम॥८
मंद हसन मुस्कयान पर बलिहारी नृपलाल।
चाहत कृपा कटाक्षको निरखत होत निहाल॥९

गलबहियां कब देखिहौं इन नयन सियराम।
कोटि चन्द्र छबि जगमगी लज्जित कोटिन काम ॥१०
चवँर छत्र सूरज मुखी लीन्हे सब सुख साज।
पान खवावत सुघर अलि चितवन में बहुलाज ॥११
वो छबि कब हम देखिहैं नयन चकोरी होय।
युगल चन्द्रमुख देखिये कृपा रावरी होय ॥१२
रङ्ग रंगीली लाड़ली रङ्ग रंगीलो लाल।
रङ्ग रंगीली अलिन में कब देखों सियलाल ॥१३
कारुण्यामृत वर्षिनी सीते गुनकी खान।
जुगलरूप हिरदें बसो यह दीजे बरदान ॥१४
काम क्रोध मद लोभ प्रभु मर्दगर्द करिदीन।
मन नहि मेरे हाथ में विषय बासना लीन ॥१५
ऐसो मन कब होयगो, छबि समुद्र मन मीन।
बिछुरत छोड़े प्रान को, रहै माधुरी लीन ॥१६
मैं चेरी हूँ चरनकी, राखो सदा हजुर।
प्रेम भक्ति अनपावनी, देहु सजीवन मूर ॥१७
हे सरजू जग पाँवनी, त्रिभुवन तारन हार।
दरस परस के करतही; नासत पाप पहार ॥१८
अवध अवधको देते हैं, अवध धाम निज धाम।
अवध धाम धामाधिपति, जहँ बिहरें सियाराम ॥१९
अवधपुरी बसिये सदा, करि सरजू जल पान।
रसना से सिय पिय रटो, हिर्दे में धरि ध्यान ॥२०

गुरू कृपा से बनैगी, गुरू लखावैं राम।
गुरु बिन भटकत जगत में, कोई न आवै काम ।।२१

गुरु कहे नाते जगत के, त्याग त्याग गहु सार।
सीते तेरी स्वामिनी, रघुनन्दन उर हार ।।२२

भइ कृपा श्रीगुरुन की नातौ दीन दृढ़ाय !
चारुशीला चारज करी, मन की तर्क मिटाय ।।२३

भई भाँवना महल की, सेवा कर में लीन।
अष्ट भवन की कुंज में, सेवा कर चित दीन ।।२४

समय–समय तत्पर रहें, पिय प्यारी अनुकूल।
युगल माधुरी छबि निरखि, मिटे जगत के सूल ।।२५

हे सीते नृपनंदिनी, हे प्रीतम चितचोर।
नवल बधू की वीटिका, लीजे नवल किशोर ।।२६

हँस बीरी रघुबर लई, सिय मुख पंकज दीन।
सिया लीन कर कञ्ज में, प्रीतम मुख धरि दीन ।।२७

निरखि सहचरी युगल छबि, बार-बार बलिहार।
करत निछावर विविधि विधि, गज मोतिन के हार ।।२८

रतन सिंहासन राजहीं, गलबहियाँ दिये लाल।
चहुँ दिशि अलिगन सेवती, नवल रँगीली बाल ।।२९
मधुर मधुर बाजा बजे, बीन मृदङ्ग सितार।
रास रङ्ग रासस्थली, रचना रची अपार ।।३०

चहुँ दिशि अलि अपार हैं भई मण्डलाकार ।
हाव भाव कटाक्ष को करत सखी बहु बार ॥३१
मध्य लड़ैती लालजू, रमत सखिन के संग ।
कबहुँ युगल मिलि नृत्यत, थेइ थेइ फरकत अंग ॥३२
यहि बिधि सबको सुख दियो नवल लड़ैती लाल ।
बैठे गलबहियाँ दिये फसी सखी छबि जाल । ३३
भोग सकल आगे धरे, छै रस चार प्रकार ।
जेंवत युगल किशोर मिलि, करत बिनोद अपार ॥३४
अचमन करि बीरी लई, अतर लगायो अङ्ग ।
फूल माल पहिराय उर, राजत सिय पिय सङ्ग ॥३५
चंवर छत्र सूरज मुखी, कोई पंखा ढोर ।
अपनी-२ सौंज लिये, सेवत सखी करोर ॥३६
यहि सुख में चित दीजिये, सकल बासना त्याग ।
सेवा सिय पिय अहरनिसि, चरनन में रहु लाग ॥३७
कृपा करी श्रीजानकी, पायो महल निवास ।
युगल चरन सेवत रहौं, दई खवासी खास ॥३८
योग यज्ञ तीरथ बरत, नहीं तुलत यहि साथ ।
सब साधन को फल यही, सेवो सीता नाथ ॥३९
रूपलता बिनती करी; सुनिये लड़ैती लाल ।
राखो सदा हजूर में, तुम हौ दीन दयाल ॥४०

इति श्रीरूपलता कृत विनय चालीसी सम्पूर्णम्

श्री बालअली कृत नेह प्रकाश

॥ दोहा ॥

भूषण नग जगमग रहे, दरश करत बड़ भागि।
जनु दृगसों अनुराग कर, मन तन सों रहे लागि ॥१

मुक्तामाल कि खुभि रही, प्रिया हँसनि लगि हीय।
रहे अङ्गसों उरझि अकि, सज्जन मन कमनीय ॥२

गूढ़ वेद वेदांत को, निज सिद्धांत स्वरूप।
जयति सिया अह्लादिनी, शक्ति-शक्ति गनभूप ॥३

प्रकृति पुरुषते जे परे, परातत्व रस रासि।
सो वह परम उपासना, वहै जु परम उपासि ॥४

एकाकी नहि रमन ह्वैं, चहत सहायहि सोइ।
रमत एकही ब्रह्म यह, पति पत्नी तनु होइ ॥५

जग जिनके सुख सिधु के, लव उप जीवत जीव।
पगे प्रेम रस स्वाद सों, रमत प्रीया अरु पीव ॥६

यह सब साज समाज सुख, धाम परेश समान।
काल कर्म गुण प्रकृतितै, परतर जानत जान ॥७

॥ सोरठा ॥

महल बहुत छबिमान, जरे जरायनि जगमगे।
तने घने सुबितान, परदाबने बिछावने ॥८

॥ दोहा ॥

सींचे बिबिधि सुगन्धनव, मुक्ता बंदन माल।
चहुँदिशि अगणित नगनयुत, बने झरोखा जाल ॥९

सुन्दर गादी गेंडुआ, बिबिधि खेल के साज।
युगल चरण सेवैं तहां, प्रमुदित सखी समाज ॥१०

श्री बिमलारु बिशारदा, बिजया बामाबाम।
कमला कांतिमती कला, केलि, कोविदा नाम ॥११

कामा केशि किशोरिका, कांचि कोशला कालि।
कंजा क्षीरु कलावती, कंजलोचना आलि ॥१२

कुँजा कलिका कोकिला, काशि कृपाला जानि।
कल्याणी गन कुंकुमा, कृपा पूरणा मानि ॥१३

कृष्ण शारिका कामदा, कृपावती सुखरूप।
चन्द्रा चन्द्राकला अली, चन्द्राननी अनूप ॥१४

चम्पक बरणी चन्द्रिका, चारु दरशना बाल।
चारुद तीरू चकोरिका, पुनिगण चम्पक माल ॥१५

देव वर्णिनी देविका, देव रूपिणी नारि।
देवी दुर्गा दामिनी, दैवज्ञा उर धारि ॥१६

गनिज्ञाना गुण सागरा, ज्ञप्ति गुणज्ञातीय।
नन्दानवलासी नवल, नागरि अतिकमनीय ॥१७

प्रेमा परमा पावनी, प्रेमप्रदा तिहि ठौर।
प्रियंबदा परज्ञा परा, भनि पौढ़ा अलिऔर ॥१८

भाव विदा भावनि भवा, भासि भावरा भीरू।
मुग्धा मुदा मनोरमा, सखि मृग सावा धीरू ॥१९

मोद दायका माधवी, मृगनाभी शिरनाइ।
मानिनि माधुरि मंगला, मान कोंविदा गाइ ॥२०

रहसज्ञा रसरूपिणी, रम्या रामा लेखि।
और रमा रतिबर्द्धिनी, रोहा उर्णि विशेखि ॥२१

शांता सुखदा स्वच्छदा, सीमंतिनि उरआनि।
श्यामासती सुमध्यमा, साधु मती सुख साखि ॥२२

श्रृङ्गारा चतुरा सुरसि, साहसिका सुकेशि।
सुरा सुन्दरी शारदा, भनि सांभवी सुदेशि ॥२३

सुरभि सरूपा, सागरा, संज्ञा नारि सुनामि।
शांति रूपिणी शंकरी, सुप्रिया सुछेपाभामि ॥२४

॥ सोरठा ॥

यद्यपि अली अपार, मुख्य गनी गणनायक।
द्वय हजार हजार, यक यक कि सखि किंकरी ॥२५

॥ दोहा ॥

तुल्यबेश गुण रूपसखि, न्यून किंकरी जानि।
गति बल धन सुख सबनिको, एक मैथिली मानि ॥२६

दया दृष्टि सर्बेश्वरी, दइसेवा जो जाहि।
भरी प्रेम आनन्द रस, सखी करत सो ताहि ॥२७

केश प्रसाधन करहिं कोउ, सुरभि सुतेल चढ़ाई ।
पहिरावहि धूपित बसन, कोऊ उबटि नहवाई ।।२८

कोउ अलि बिबिध सुगन्धयुत, रचहिं वेष शृङ्गार ।
उष्ण असन वहुरसन दै, बारि सुरभि हिमसार ।।२९

बीरी ललित सवांरि अलि, दुहूं ललन कर देहिं ।
बड़भागिन तांबूल कोउ, झुकि पसारि कर लेहिं ।।३०

गहे सो चामर छत्र कोउ, क्रीड़न गन्ध रसाल ।
बसन बिभूषण आदरस, कोउ कुसुमन की माल ।।३१

ठाढ़ी अलि चहुँ ओर कों, रचहिं विछौना वान ।
धरहिं वाद्य पुनि करहिं कोउ, उघटि नृत्य सुरगान ।।३२

रीझि अली दुहुँ ललन छबि, निरखि बलैया लेहिं ।
राई लोन उतारि पुनि, बारि अपनपौं देहिं ।।३३

अनगिनती गिनतीन मैं, निपटहु कपट निहारि ।
सिय कीनी चेरी चरण, सीस नवावत नारि ।।३४

तिन मधि बिहरत रँग भरे, नवल किशोर किशोरि ।
नेकन न्यारे होत कहुँ बँधे प्रेम की डोरि ।।३५

मुख छबि मिलि इक मुकुर मैं, कहुँ निरखत दृगकोर ।
कबहुँक इकटक परसपर, ह्वै रहे चन्द्र चकोर ।।३६

असुवन अंतर करत लखि, प्रिय दरशन बिच आई ।
निंदत दोउ आनन्द को, ललन हिये अकुलाइ ।।३७

कबहुँ नेह के भारभरि, लपटि लटकि रहे दोउ ।
छके प्रेम मादिक पिये, रहत न तन सुधि कोउ ।।३८

कबहुँ कुवँर दोउ परसपर, निजकर करत सिंगार ।
बीरी खात खवात पुनि, बहुबिधि करत बिहार ।।३९

कबहुँ केलि कंदुक गहत, कहुँ पासन सतरंज ।
कबहुँक हित बतियां करत, बढ़त मंजुरस पुंज ।।४०

।। नायक बचन सोरठा ।।

किये सपथ कहुँ तोंहि, प्राण प्रिया निज हीय की ।
अस न अपनपौ मोंहि, जैसी प्रिय तुम लगतिहौ ।।४१

।। दोहा ।।

मिलौं कोटि ब्रह्मांड हूँ, अस न मोंहि आनन्द ।
होतजु तब मुख कमल को, पान करत मकरंद ।।४२

श्रवण नैनमन तुम बसे, और न कछू सुहात ।
तेरीहित चितवनि उपर, वारे सब सुख जात ।।४३

मेरे हिय आनन्द को, तुमहीं प्रिये निदान ।
हौजिय की जीवन जरी, प्राननहूँ के प्रान ।।४४

निरखत तुम मुख कंज छवि, पलक न परत सुहाय ।
धन्य अपनपौ गनत हौं, तुमसो धन पाय ।।४५

तेरे किंकरि वर्ग को, हौं हौं सदा अधीन ।
देउ अपनपौ दीन ह्वै, मैं न गनौ कछु दीन ।।४६

प्रेम भरे प्रिय बचन सुनि, प्रिया मधुर मुसकाय।
बारि विभूषण बचन पर लिये लाल उरलाय ।।४७

।। सोरठा ।।

रंग रंगीले लाल, रंग रंगीली लाड़िली।
बिहरत नैन बिशाल, रंग रंगीली अलिन में ।।४८

।। दोहा ।।

बहु सुगंध कुसुमन रची, दुग्ध फेन समसैन।
ऐन मैन मन अलिन यह, रचै मैन को ऐन ।।४९
सैन साल मेंहित भरे, तापर पौढ़त आइ।
रसमन बचन अगम्यसों, कहौ कौन पै जाइ ।।५०
नील पीत छबि सों भरे, पहिरे बसन सुरंग।
जनु दंपति यक रूप ह्वै, परसत प्यारे अंग ।।५१
नील पीत नव बसन छबि, हिलिमिलि भये यकरंग।
हरे हरे अलि कहत हैं, हिये धरि सिय पिय अंग ।५२
रस बिलसत प्रीतम सुखहि, चिर निशिचाह प्रवीन।
चन्द्रकला चंद्रहि निरखि, मधुरजंत्र सुरकीन ।।५३
सुख निद्रा पौढ़े उरध, नारी स्वरसे होय।
प्रेम समाधि लगी मनौ, सखि जानत सूखसोय ।।५४
अलि कुकुट धुनि सुनि, डरे, रविहि देत यह टेर।
कहि गुरूजन ऐहैं इहां, भलो नहीं यह बेर ।।५५

अमल सेज पर कमल से, दृगन सलोने गात ।
निशि हुलसे बिलसे लसे, अलसे उठे बिभात ।।५६

जगे कुवँर रस रंग भरे, पगे परस्पर प्रेम ।
उमगे गल बहियां लगे; पगेकि मरकत हेम ।।५७

कहि पिय-२ प्यारी बिवस, नहि तन बसन सम्हाल ।
घुर्मित दृग दोउ झुकि रहे, रस मतवारे लाल ।।५८

महाप्रेम आवेसते, भये तन मय आकार ।
हौं प्रीतम हौंहीं प्रिया, यह रहि गयो बिचार ।।५६

।। सोरठा ।।

उलटि बढ़ीतव प्रीति, नवल लड़ैती लाल हिय ।
कै बहुरचो वहरीति, प्रेम स्वाद बहु विधि लहे ।।६०

।। दोहा ।।

नेह सरोवर कुवँर दोउ, रहे फूलि नवकंज ।
अनुरागी अलि अलिनके, लपटे लोचन मंजु ।।६१

दंपति प्रेम पयोधि में, जो दृगदेत सुभाइ ।
सुधि बुधि सब बिसरत तहाँ, रहे सुबिसमै पाइ ।।६२

कबहुँक सुन्दर डोल महि, राजत युगल किशोर ।
अद्भुत छबि बाढ़ी तहाँ, ठाढ़ी अलि चहुं ओर ।।६३

हिलिमिलि झूलत डोल दोउ, अलिहिय हरने लाल ।
लसी युगल गल एकही, सुमन कुसुम मयमाल ।।६४

सुन्दर गलबहियां दिये, लालन लसे अनूप ।
तन मन प्रान कपोल दृग, मिलत भये इक रूप ।।६५

गौर श्याम बिचरत भये, मनहु ँ किहैं इक देह ।
सोहैं मन मोहैं ललन, कोहैं हरतिय नेह ।।६६

पिय कुंडल तिय अलक सों, कर कंकण सौमाल ।
मनसोमन दृग दृगन सों, रहे उरझि दोउलाल ।।६७

यद्यपि दंपति परसपर, सदा प्रेम रसलीन ।
रहे अपनपौ हारिकै, पै पिय अधिक अधीन ।।६८

श्याम बरण अम्बरन को, सुकृत सराहत लाल ।
छरा हरा अँग रागभो, चाहत नैन बिशाल ।।६९

जो हिमहू ँ को नामसी, कोउ उचरत सुखकन्द ।
तिहि मुख की मुखके ओर हित चितै रहत रघुचंद । ७०

जनकनन्दनी नाम नित, हितहिय भरि जो लेत ।
ताके हाथ अधीन ह्वै, लाल अपनपौ देत । ७१

प्राण प्यारी ललित पग, धरत फिरत जिहिठौर ।
ताहि दृगन हित बिवश ह्वै, लावत नवलकिशोर ।।७२

हार पदिक कुण्डल तिलक, कबहु ँ अंक तनतीय ।
छिनही छिन विनहीं ठरे, रहत संवारत पीय ।।७३

कबहुं उड़ावत भ्रमर पिय, हाँकत कबहुँ बयार ।
प्राण प्रिया हंसि गहतकर, कहत अली बलिहार ।।७४

।। सोरठा ।।

कुवँर सांवरे गौर, हिय हरने दोउ लाड़ले ।
नवल रसिक शिरमौर, रूप भरे बिहरत रहत ।।७५

।। दोहा ।।

अङ्गराग दै अलिन मिलि, किये ललन तन गौर ।
इक छबि ह्वै प्रीतम प्रिया, ललित लसे इकठौर ।।७६
कुसुम क्रीट कबरी गुही, रंग कुमकुम मुख कंजु ।
अंजन अजित युगल दृग, नाशा बेसरि मंजु ।।७७
श्रुति कुंडल भल दशन दुति, अरुणा अधर छबिऐन ।
हितसों हँसि बोलहीं हिय हरने मृदु बैन ।।७८
भुजगर उर कटि कुसुममय, धरि भूषण पटपीत ।
पाँयन नब नूपुर कहौं, ललित लसे दोउ मीत ।।७९
एक चित्त दोउ एक बय, एक नेह इक प्राण ।
एकरूप इक बेश ह्वै, क्रीड़त कुवँर सुजान ।।८०
रीझि चितै चित चकित ह्वै, रूप जलधिसी बाल ।
बारत लाल तमाल दुति, अङ्क माल दै माल ।।८१
सब अपने भूषण बसन, अपने ही कर लाल ।
लाड़िली अङ्ग बनाइ छबि, निरखहि नैन विशाल ।।८२
कबहु अचानक आय दृग, मूदत नवल किशोर ।
छलसे गहिलीनों मनों, निज हिय हरने चोर ।।८३

कबहुँ निहारत नृत्य सुख, ललन आइ तिहि गेह।
जहँ चातुर पातुर अली, गावत पिय नवनेह ।।८४

कबहुँ तहां हिय उमगि दोउ कुवंर करत कलगान।
अलीरूप रागिनि तहां, बारत अपने प्राण ।।८५

कबहूँ चितै दोउ परस्पर, रूप जलधि से गात।
रीझत बारत अपनपौ, कहत बिवस ह्वै जात ।।८६

।। सोरठा ।।

करहिं अली रसपान, जिनके जीवन कुवंर दोउ।
बारहिं तन मन प्रान, निरखि निरखि नवनेह छबि ।।८७

।। दोहा ।।

इहि विधि बिलसैं रैंनि दिन, युगल कुवंर रसरासि।
दिव्य अमल आनन्दमय, परे प्रेम की पासि ।।८८

समय पाय सिय मिलन हित, आई गुरूपुर नारि।
रहसि कहत चित चकित ह्वै, छबि सो भाग्य निहारि ।।८९

एरी सिय बरणौं कहा, तब सौभाग्य अपार।
लग्यो रहत बहुरूप धरि, हरि जाके आधार ।।९०

नयन मीन कच्छप उरज; अरू नृसिंह कटिठौर।
कृष्ण केश हियराम बलि, बामन तोसम और ।।९१

कोटि कोटि ब्रह्मांड को, एकै ईश्वर जोइ।
तेरी हित चितवन सिये, चहे निरंतर सोइ ।।९२

ब्रह्मशक्र शिव मुनिन के, जो जीवन धन पीय।
ताकी तू जीवन जरी, शील सागरी सीय ।।९३

ब्रह्म रूद्र सुरगण सबै, रहत जासु बसदीन।
सो पिय मुख निरखत रहें, सिय तेरे आधीन ।।९४

बात कहत रसकेलि की, ढिग गुरूजन लजिजीय।
दै निज भूषण नगन मुख, कह्यो मौनशुक सीय ।।९५

।। पुर बधू बचन ।।

चित इत उत चितवत नहीं, तो गुनमति अतिभीन।
भई उदासी भवनते, तैं दासी करि लीन ।।९६

तेरी छबि हेरी जबै, एरी बलि अलि सीय।
चेरी ह्वै नेरी रहे मेरी मति दृगतीय ।।९७

तू सिय भाग सुहाग सुख, रूपशील गुण रासि।
पग्यो सदाजिहिं प्रेम सों, लग्यो रहैं पिय पासि ।।९८

तेरे हित ब्रत हीय धरो, अस अधीन ह्वै वाल।
तिया नामकी वस्तु अंग; परसि लजावत लाल ।।९९

जानकी है तोसी तुहीं, नहिं समकहुं कोउतीय।
जा कहुं परसत स्वप्नहू, औरन चितई पीय ।।१००

तू पिय के जीय में बसी, बसे जीय तव पीय।
दोऊ इहि उरझनि रसे, लसे अलिन के हीय ।।१०१

॥ सोरठा ॥

अली सुकृत को ऐन, सबै धन्य ये सहचरी ।
नित निरखत हैं नैन, प्रीतम समतेरे सुखनि ॥१०२

॥ दोहा ॥

बीतत पलपल कल्प सम, उठति न लखिपुर बाल ।
आतुर चित रबि ओर तकि, तुरंग न तारतलाल ॥१०३
कबहुं रीझि प्रिय प्रेम पर, सियतन रूप निहारि ।
कहन लगी रसरंग पगी, अली अपनपौ वारि ॥१०४

॥ सखी बचन ॥

तब आनन दृग अर्पिसिय, आन न जानत तीय ।
तेरी आनजु कहत हौं, भल बस कीन्हे पीय ।।१०५
तेरी छबि देखत बिवस, वारि सुसर्बस सीय ।
आतुर चितवत और कछु, इतउत चितवत पीय ॥१०६
सिय जानी रानी तुहीं, सुखखानी प्रवीन ।
मानी छबि पानी किये, रसदानी दृगमीन ॥१०७
हौं वारी सौभाग्य पर, जनक दुलारी बाल ।
चेरी चेरी को चहै, मुख तेरी को लाल ।।१०८
सर्बस तोहिं अर्पेउ पिय, तूं चित लियो चुराय ।
तौतो बिन उनके अली, नहि कछु सीय सुहाय ॥१०९
प्याइ प्रेम मादिक प्रबल, तें प्रिय सुधि बिसराइ ।
करि बस बांधे गुनन सों, तऊ तुहीं मनभाइ ॥११०

बधे एकहूँ ठौर कोउ, सो पर बस ह्वै दीन ।
सब अंगन लालन बँधे, क्यों न होय आधीन ।।१११

बँधो हिय तब रसन सो, बंध्यो श्रवन कलबैन ।
अलि जानकि त्वचा परस रसरूप बँधे दृगनैन ।।११२

।। सोरठा ।।

बँधे रसिक शिरमौर, नाशा अङ्ग सुबास सो ।
रसना चाहत और हैं रसना कहु ँ रस बँधो ।।११३

। दोहा ।।

अरुण वरण तव चरण नख. हैं कि तरुणि शिरमौर ।
अनुरागी दृग लालके, बसे लसे इहि ठौर ।।११४

जावक पावक रंग छबि, निरखत अलि अनुराग ।
मनुमन भावन प्रेमरस, पावन पायन लाग । ११५

गति गायनि पायनि परसि, करि नूपुर झंकर ।
पिय हिय हरने मंत्र को, करत सुचारू उचार ।।११६

जंघ युगल तव जनक जे, अकिगृह उत्सव रंभ ।
पिया प्रेम के भवन के, किधौं सुन्दर बरखम्भ । ११७

गुरु नितम्ब कटि सिंह मिलि, पट गौतमी प्रबाह ।
किंकिणि मुनिगण अमर निज, मन अन्ह वावतनाह ।।११८

नाभि गँभीर कि भ्रमर यह, नेह निमग्न माहि ।
ता महँ पिय मनमगन ह्वैं, नेकहुँ निकरचो नाहि ।।११९

हे अलि सुन्दर उरजयुग, रहे तब उरजु प्रकाश।
नवल नेह के फन्द द्वै, अकिपिय सुख की रासि ।।१२०

लस्यो श्याम तब तन कस्यो, कंचुकि बसन बनाय।
राखे हैं मनो प्राणपति, हिये लभाय दुराय ।।१२१

सिय तेरे गोरे गरे, पोति जोति छबिछाय।
मनहु रंगीले लाल की, भुजा रही लपटाय ।।१२२

कुसुमित भूषण नगन युत, भुज बल्लरी सुबास।
लालन बीच तमाल के, कन्धर कियो निवास ।।१२३

चक्र तरौना भौंह युग, अलि बलि दृग मृग जोर।
रदन अमीकण बदन तव, शशिरथ पीय चकोर ।।१२४

रघुबर मनोरंजन निपुण, गंजन मद सरमैन।
कंजन पर खंजन किधौं, अंजन अंजित नैन ।।१२५

नथ मुक्ता झलकत पगे, नाशा स्वास सुबास।
उरझि परयो यह पीय मन, मनहुँ प्रेम के पास ।।१२६

तब अलि झलकत अलक अकि, रस शृङ्गार कि धार।
श्याम भये रंग भीजि तिहि, प्रीतम प्राण अधार ।।१२७

।। सोरठा ।।

तै तनधारी तीय, सुख सारी बर बरण की।
करत प्रशंसा पीय, हिय में याके भाग की ।।१२८

॥ दोहा ॥

सब दिशि कंचन मय करत, तव तन जोति अनूप ।
मनु झरि झरि अंगन परै, अङ्ग न मावै रूप ॥१२९

सिय तब रूप अपार पिय, पियत न नैन अघाय ।
भये चहत सुरराज से, हिय रे अति अकुलाय ।१३०

रूप भार गुण भार नव, योबन भारहिं पाइ ।
क्यों सहिहैं दृग भार तो, निरखत नाह दुराइ ॥१३१

वारि अपनपों दृष्टि तै, डरि अलि कछूक होन ।
रहत उतारत हीय महिं, पियहूं राई लोन ॥१३२

सर्बस वाँरत बिवश ह्वै, तेरी छबिहिं निहार ।
बारि बारि पीवत रहत, बारि बारि पिय बारि ॥१३३

तूँ सिय पिय के रंग रंगी, रंगे पीय तब रंग ।
रहे अली इक रूप ह्वै, ज्यों जल मिले तरंग ॥१३४

कबहुँ कहत पुर वधुन सों, निजहिय हित की बात ।
स्वामिनि के गुणगण सुमिरि,किंकरि गातन मात ॥१३५

॥ किंकरी बचन ॥

हम सम धन्य न और भूवि, भरे भाग्य भरिपूरि ।
जिनके सियसी स्वामिनी, पियकी जीवन मूरि ॥१३६

हैं हमरे बलजात कुल, सिय पद कल जल जात ।
पुण्य व्रत सुख ब्रात पुनि, तात मात हित भ्रात ॥१३७

कृपा अमिय मय दृष्टि सों, करत रहत नित पोष ।
कबहुं न हिय में धरत हैं, अपने देखे दोष ।।१३८

अवगुण निधि हम हैं सही, एकहि गुण कमनीय ।
पति आधीन सुनायिका, लही स्वामिनी सीय ।।१३९

स्वामिनि के बल गर्वसों, हम न गनत हैं काहु ।
रहत नित्य निर्भय भई, प्रतिदिन अधिक उछाहु । १४०

हमरे शिर पै स्वामिनी, होउ सदा यह सीय ।
जन्म जन्म हम किंकरी, रहैं चहैं निज हीय ।।१४१

।। सोरठा ।।

धरैं सीयपद ध्यान, यहि बिधि मंजु समाज सुख ।
बसहिं पीय के प्राण, प्रेम प्रगट तेहिं भक्तिमय ।।१४२

सिय मूरति जेहिं हिय बसी, तापहिं नैन बिशाल ।
उरराने आवत चले, पारावत से लाल ।।१४३

जनक सुतासम देवता, कहौ कौन जग और ।
जाके बस रघुबीर पिय; ब्रह्म रूद्र शिरमौर ।।१४४

योग यज्ञ तप नेमब्रत, त्याग त्यागिये दूरि ।
होय अनन्य ब्रत सेइये, श्रीजानकि पद धूरि ।।१४५

हौं अल्प कुशसेव बिनु, दीन जानि करू नेहु ।
सकल सुकृत मिलि सीयपद, धूरि भूरि फल देहु ।।१४६

उमारमा सरस्वति सची, जिहिं बिभूति के रूप ।
जयति सिया अह्लादिनी, शक्ति शक्तिगण भूप ।।१४७

ए अलि नेह प्रकाशिका, बचन हिये में राखि ।
त्रिविध सजाती भक्त बिना, जिन कतहुँ कछु भाखि ।।१४८

।। सोरठा ।।

दम्पति नेह प्रकाश, कथा सजिवन अलिन की ।
ह्वै वहैं परिहास, आन श्रवण मुख परत ही ।।१४९

।। दोहा ।।

कहत सुनत पुनि गुनत जिहि, हिय दम्पति दरसाहि ।
सियवर नेह प्रकाशिका, बसै सदा उर माहि ।।१५०
प्रगटि नव श्रुति सिंधु शशि, गणित समय शुभ सोई ।
दुख हरनि मंगल करनि, भक्ति वितरनि होई ।।१५१
यह मन नेह प्रकाशिका पुरि भुरि हिय आस ।
करहु लड़ैती लाल के, चरण दास के दास ।।१५२

।। दोहा ।।

जनकलली की सहचरी बालअली विख्यात ।
बन्दौं तेहि पद युगल शुभ सोभित सुठि जल जत ।।

इति श्रीमच्चरणदासानुजीवी श्री बालअली कृत
नेह प्रकाश सम्पूर्णम्-शुभम्

॥ मंगला चरण ॥

॥ दोहा ॥

श्रीसतगुरुहिं प्रनाम करि, पावन परम पराग ।
बंदि बिमल बर बोध सुख, निर्विरोध हित राग ॥
श्रीकरुनाकर कृपिनजन, पालकपन निर्हेतु ।
बन्दों सतगुरु बार बहु, भवनिधि दुस्तर सेतु ॥
श्रीमारुतनंदन शिवा सहित, शंभु सुखकन्द ।
सुमिरों सियपिय प्रेमप्रद, हरन अखिल अघद्वन्द ॥
श्रीगौरीशसुवन सरस, सदन सुमति गुनऐन ।
मंगलकरन सुचरन नित, नमो मथन मदमैन ॥
श्रीबानी सियराम गुन, कलित कला लयलीन ।
बीना पुस्तक कंजकर, प्रनमों सुपद प्रवीन ॥
चहुँयुग माहिं सुसंतजे, रसिक नाम अभिराम ।
तिन पदपंकज नमोनित, दायक उर अभिराम ॥
परते पर पावन परम, अगजग जीवन जान ।
बन्दों सीताराम निज, नाम महामुद खान ॥

॥ श्रीसद्गुरुवे नमः ॥

संत विनय शतक

श्रीसतगुरु सिरताज पद, बन्दौं बारहि बार।
दीजे युगल अनन्य को, नाम नेह निज सार ॥
श्री श्रीसिय रघुवीर के, प्राण पियारे वीर।
श्री हनुमंत दयाल ह्वै, दीजे नाम गंभीर ॥
श्रीमुनिराज अगस्त जू, अति कृपाल गुन ऐन।
अगुनि समुझि मोहि दीजिये, नामरमन दिनरैन ॥
श्रीनारद तारद विशद, सिय पिय यश दातार।
युगलानन्य अजान को, दीजै नाम अधार ॥
बन्दौं सनकादिक चरण, हरन अमंगल मूल।
दीन खीन लखि दीजिये, नाम प्रेम अनुकूल ॥
श्रीमुनि शुभ लच्छन सहित, सरस सुतीछन पाय।
बंदि सदा जांचौ इहै, नाम सनेह सुभाय ॥
श्री बशिष्ठ महाराज गुरु, सुपद नमो शतवार।
दीजै दीन दयाल मोहि, नाम रटन एकतार ॥
श्री शंकरषन शेष पुनि, श्री रामनाम तद्रूप।
बार-बार बन्दौं समुद, दीजे नाम अनूप ॥
श्री श्रीकाशीनाथ पद, पंकज नमो सप्रेम।
नाम लीन सम मीन जल, देहु नाम जप नेम ॥

श्री बलिराज बिचित्र गुन, ध्रुव प्रह्लाद पवित्र ।
बन्दौं चरण सरोज नित, देहु नाम रसचित्र ।।
श्रीसियराम सनेह सुख, भाजन निखिल कपीश ।
सुपद वन्दि मांगत सतत, देहु नाम बकशीश ।।
बिशद विभीषण पद कमल, प्रनमो सहित सनेह ।
दीजै युगल अनन्य को, नाम रटन गुन गेह ।।
भीषम आजारज ललित, आरज चरण मनाय ।
मांगत हों वरदान इह, रहों नाम लय लाय ।।
अवध निवासी एकरस, रसिक युगल रसधाम ।
तिनहिं बन्दि बहुबिनय युत, याँचत नामललाम ।
श्रीशुकदेव दयाल दृग, दानी रहस अनूप ।
याँचत तिन पद प्रनति कर, नाम रटन गत धूप ।।
श्रीमुनिनायक व्यास, श्रीपारासर तप रास ।
बार-बार बन्दौ सुपद, कीजे नाम प्रकाश ।।
श्रीसुख सौंपन सीम सुचि, भरत बिकार बिहीन ।
नमो नेह युत दीजिये, नाम नेह पन पीन ।।
श्रीगननायक बुद्धिवर, बरघन नाम निवास ।
दीजै दिन मनि नाम नित, नमो समेत हूलास ।।
श्रीसूरजशशि नखत गन, सुमनस सकलमनाय ।
मांगत मोद प्रमोद निधि, नाम रमन अधिकाय ।।

श्री बिरंचि विज्ञान घन, रामनाम निज नेह ।
निरत निरन्तर बन्दि पद, याँचो नाम सनेह ।
श्रीमुखचार सुवन सकल, बन्दौं बार हजार ।
दीजे युगल अनन्य दृढ़, नाम रटन एकतार ।।
श्रुति संहिता पुरान प्रिय, आगम ग्रन्थ अनन्त ।
निशि दिन नाम निवासप्रद, प्रेम नमो छविवन्त ।।
श्रीमद्रामायन सुपद, पंकजो नमो सप्रेम ।
युगलानन्य निजोर लखि, नाम देहु पद छेम ।।
श्रीकोकिल मुनि रहसनिधि, बाल्मीकि गुनखान ।
पद पंकज प्रनमामि नित, दीजे नाम प्रधान ।।
याज्ञवल्क भरद्वाज मुनि, ऋषभदेव अवतार ।
सब सन याँचत जोरि कर, दीजे नाम उदार ।।
चतुर्विश अवतार तिमि मनु कंदब रिषिराज ।
सबके पद पंकज नमो देहु नाम छबि छाज ।।
धर्मराज श्रीराम गुन ज्ञान निवास हमेश ।
नमो नेह चहि वितरिये राम नाम आवेश ।।
श्रीमिथिलाधीष निमि महाराज प्रमुखपद बन्दि ।
मांगत सियवर नाम रुचि सुचि सुप्रीति निजछंदि।
श्री श्री श्रीसरयू सरस सहित अवध पद ध्याय ।
मांगत श्रीसियवर ललित नाम रटन लयलाय ।।

श्री कामदगिरिराज श्री मिथिला रहस निवास।
सुपद सनेह समेत नति करत पूरिये आस ।।
और चाह सपनेहुं नहीं चाहों नाम उमंग ।
दीजै युगलअनन्य कहँ भजन भावना रंग ।।
श्री श्रीसुचि परिकर युगल सुयश सजीवन खान ।
तिनहि नमो नित नेह युत दीजै नाम निधान ।।
और जिते श्रीनाम के रसिक देव मुनि संत ।
तिहुँ जुग जाहिर नमो नित देहु नाम रसवंत ।।
शिवा शांभवा शारदा रमा, प्रमुख सब शक्ति ।
बन्दों चरण नलिन सदा, देह नाम भल भक्ति ।।
जिनको सबसे अति अधिक, मधुर लगत निज नाम ।
तिन पद पनही सुरज, मम भाल लसत अभिराम ।।
नामी संत अनंत युग जेते, सत सुख सिन्धु ।
बन्दत युगलअनन्य तिन, सुन्दर सुपद सुगन्ध ।।
सब सन यह वरदान नित, यांजत युग कर जोर ।
नाम नेह हरदम रहे, रहित काममय मोर ।।
श्री श्री रामानुज सुभग, स्वामी सुपद प्रणाम ।
करों भरों आनन्द उर, पावों नाम ललाम ।।
जेते श्री मारग निपुण, आचारज गुन ऐन ।
नमो निरन्तर दीजिये, राम नाम चित चैन ।।

श्री श्रीरामानन्द प्रभु, तारक राम स्वरूप ।
तिन सरसीरुह चरण नित, नमो समन तम कूप ॥
कोटिन बार प्रणाम करि, मांगत दास दयाल ।
रैन ऐन सुमिरन सधे, बंधे सुरसना हाल ॥
श्री श्री अमित प्रकाशमय, अमल अनंतानन्द ।
बन्दौं युगल सरोज पद, दीजै नाम अमन्द ॥
श्री श्री सब सुख सार श्रुति, नाम ज्ञान छवि धाम ।
बन्दौं कलित कबीर पद, यांचौ नाम निकाम ॥
श्री कबीर रस धीर के जे, नेही निज राम ।
शिष्य सकल तिनको सतत, बन्दत हित परनाम ॥
श्री प्रद पैहारी चरण हरत, अखिल अघपुंज ।
बार-बार बन्दौं सदा दीजै नाम निकुँज ॥
श्री स्वामी सर्वेश गुण, मंडित अग्र अनूप ।
बन्दों पद पंकज सदा, दीजे नाम स्वरूप ॥
कठिन काल के भाल पर, दिए सुपद रमनीय ।
बन्दों कील कृपाल नित, दीजै नाम अमीय ॥
श्री श्री केवलराम सुखसागर दया निधान ।
विदित लोक द्वारा, बिषद देहु नाम रसखान ॥
श्री पीपा प्रीतम परखि पायो प्रभा परेश ।
नमो चरण कमनीय, द्रुत दीजै नाम सुदेश ॥

श्री रैदास प्रकाशनिधि, अगम अथाह स्वरूप ।
पारस तजि दियो तृण सदृश तिन पद नमो अनूप ।।

युगलअनन्यशरण सदा याँचत नाम दयाल ।
दीजै निज सेवक समुझि शमन सकल शकशाल ।।

श्री श्री सदन सघन सरस नेही नाम प्रधान ।
बन्दौं बार सहस्र पद दीजै नाम निशान ।।

बाल्मीकि सुचि स्वपच कुल तारक त्रिगुण अतीत ।
बारहिं बार प्रणाम मम दीजै नाम अजीत ।।

श्री दादू दरयाब दिल दुर्मति दलन दूरुस्त ।
बन्दत युगलानन्य नित दीजै नाम निशस्त ।।

श्री रज्जब सुन्दर सुभग बचन हरन जगलाल ।
दीजे नाम सनेह मोहि संतत दीन दयाल ।।

श्री शुकदेव दयाल के सेवक अति सुखरास ।
चरन दास पद नति सतत दीजै नाम सुवास ।।

श्री बेनी बाजिन्द बरन हरन हिय ध्यान ।
धरन तरन तारन हमें दीजै नाम प्रधान ।।

श्रीसंत सहित सुनाम रस रसिक संत सुचि दास ।
प्रनमो पद अरविन्द नित दीजै नाम प्रकाश ।।

श्री श्री राम चरण हरन भव भय नाम निकेत ।
तिन पद पंकज नमो नित दीजै नाम सहेत ।।

और संत जे नाम रस नेही संत सुभाव ।
रास सुजन चेतन प्रमुख बन्दि सुजांचत नाव ॥
श्री जगजीवन दास सुख रास नाम रस रूप ।
तिन पद मम नित नित लसे दीजै नाम अनूप ॥
श्री दूलन अन मूल गुन, सहित रहित शकशूल ।
नामी सरस सुभाव सुचि, बन्दौं प्रभु अनुकूल ॥
नाम सजीवन मूरि मोहि, कीजे अब बकशीश ।
नवल दास युत कृपा, करि बन्दौं पद धरि शीश ॥
छेमदास छिति छेम कर, कलित गोसाईं दास ।
बन्दौं नाम सनेह हित, संतत सजि विश्वास ॥
सत्त नाम रस रसिक जे, संत अनंत अखंड ।
बन्दौं तिनके पद कमल, पूजनीय ब्रह्माँड ॥
यांचो युग करजोरि तिन, पास सहित अभिलाष ।
नाम रंग रस दीजिये, सब विधि प्रनमत दास ॥
श्री श्री नानक नेह निधि, नाम रहस सुचि सिन्धु ।
वन्दौं तिन पद पंकरुह, अमल अलौकिक बंधु ॥
तिनके नव अवतार सुख, सार बन्दि वहु बार ।
यांचत नाम सुप्रीति गत, काम तैलवत धार ॥
पलटू दास उदास दृढ़ अवध, निवास स्वच्छन्द ।
करामात सागर सुधा, नाम रसिक गत द्वन्द ॥

विरति बलित वर बोध घन, बन्दों तिय युग पाय ।
दीजे नाम सनेह मोहि, हरसायत सुखदाय ॥
भीषादास गोविन्द गुण, मंडित प्रबल प्रताप ।
बन्दों तिन जलजात पद, दीजै नाम सुजाप ॥
श्रीश्री मधुर मरन्द निज नाम, रसिक भुज चार ।
अद्वितीय बन्दौं, चरण दीजै नाम उदार ॥
श्री मुरारि मानस अमल, करन नाम गुण ऐन ।
युगलानन्य सनेह सजि, बन्दत पद मुद देन ॥
नाम नेह आरत सहित, बेपरवाही संग ।
दीजै सुखनिधि कृपा करि, अविचल अमल उमंग ॥
श्री सावित सद शौक रस, दासमलूक अचूक ।
पिय पायो अति अमल, बिधि देहु नाम माशूक ॥
युगलानन्य सुचाह नित, कब रमिहौं निज नाम ।
सब सन्तन सन विनय बहु, यांचो वरण ललाम ॥
श्री श्री धना धनी सुपद बन्दि, समेत उछाह ।
मांगों मन मनमथ हरन, नाम निवारण दाह ॥
कनक दास तिमि रंगनिधि, दासपुरन्दर संत ।
बन्दौं दीजै नाम रस, हरसायत रसवंत ॥
तुकाराम सब पुष प्रभु पुर, पहुँचे अनयास ।
नमो सुपद दीजे, सुधासिन्धु नाम अघनास ॥

श्री मीरा करमा कलित सुचि, सुरसरी पुनीत।
बन्दौं पद पावन परम, देहु नाम जप नीत ।।
हैं जेती वामा विमल नाम, रूप गुण लीन।
तिनहि नमो नित नेह, युत चाहो नाम नवीन ।।
श्री प्रद पावन पारखी नामी, संत समाज।
सेवन सरस सनेह, श्रीनाम देव छवि छाज ।।
बन्दौं युग जलजात पद, असद दमन दुतिवन्त।
दीजै युगलानन्य को, नाम नेह छविवन्त ।।
श्री जयदेव दयाल सद, सेवक कवि सिरताज।
दीजै युगलानन्य कहूँ, नाम मधुर रसराज ।।
ज्ञानदेव निज नाम के, अचल उपासक धीर।
बन्दौं तिन पदपंकरूह, दीजै नाम गंभीर ।।
रांका-बांका प्रेमनिधि, नाम निरत दृढ़ बोध।
तिन पद मम नति रति सहित, देहु नाम सुखसोध ।।
मानदास आशय अमल, सकल कामना हीन।
बन्दौं तिनहिं सनेह सह, दीजैनाम प्रवीन ।।
भजन निरत भाविक प्रबल, श्रीशुचि पर्वत दास।
नमो नमो तिन चरणरज, देहु नाम सुखरास ।।
श्री श्री रामप्रसाद गुन अगम, अमल सुख सार।
बन्दौं बार हजार पद, पंकज परम उदार ।।

नाम रमन की चाह उर, उत्कंठा दिन रैन।
सो पूरन प्रभु कीजिये, कृपा सिन्धु मृदु बैन ।।
श्री श्री रामचरण चरण प्रनमत, कोटिन बार।
पावों नाम सनेह सुख, सर्वोपरि रसधार ।।
श्री श्री शंकर दास सुचि स्वामी, मम सिरताज।
रामनाम धन धनद बर, वरद गरीब निवाज ।।
और दौर दुरवाय मम जानि, अनुज निज छोट।
दीजै नाम प्रकाश, सुख रहे सुमन तेहि ओट ।।
श्री श्री कृपानिवास युग, रुप नाम रसपुंज।
बन्दौं संतत नेह युत, दीजै नाम निकुंज ।।
श्री श्रीरामसखे सबल, शौकी रूप सुनाम।
प्रनमत तिन पदकंज, मोहि दीजे नाम सुधाम ।।
लालन लाज रहस्य गुन, नाम लीन जल मीन।
तिन पद नति मम बार बहु, नाम देहु लखि दीन।
सूर सकल सिरताज मम, नाम रुप गुण ऐन।
तिनके पद पंकज प्रनति, मेरी सदा सुखैन ।।
नाम नेह निज कृपा करि, मोहि दीजै सब भांति।
आठ पहर चौंसठ घड़ी, सुनो श्रवन धुनि कांति ।।
श्रीश्री अखिल अशिव समन, सीतारमण सुदास।
तारक जीव कदंब कलि, संतत हृदय हुलास ।।

श्री श्री गोस्वामी सरस, तुलसीदास पुनीत ।
पदपंकजरज नमो नित, नाशक अमित अनीत ।।

मेरे प्राण अधार सम; सौंपन सुमति सनेह ।
दीजै दया निकेत मोहि, नाम रटन गुन गेह ।।

श्री श्री सदगुरू दयानिधे नेही नाम समेत ।
तिनहि नमो नित नेह युत, दीजै नाम सुहेत ।।

जे राते माते सुधा सार, नाममधि संत ।
तिनके अमल अनूप पद, नमो नमो छविवंत ।।

चाह नहीं बैकुण्ठ की नहिं, चाहौं गोलोक ।
राम रटन अभिलाष उर, सब मिली करहु अशोक ।।

मैं मतिमन्द असाध्य रुज, ग्रसित कलंक निकेत ।
पै श्री संत सुचरण रज, नमो हमेश सहेत ।।

व्यर्थ बचन वकध्यान धरि, वकत बिताओ जन्म ।
अब सब संतन की शरण, लीन्हों तजि जिय शर्म ।

नाम सुकीरति सुनि श्रवण, सँत सुबाणी संग ।
तेहि हित उपज्यो चाव चित,भली प्रकार उमंग ।।

सो पूरन बिन आप सब कृपा, न होय कृपाल ।
ताते बारहिं बार मम, विनय करों प्रतिपाल ।।

मेरे आन उपाय नहिं, केवल संत अनंत ।
चरण आस दृढ़ एक रस, भेटन हित सियकंत ।।

मम अवगुन दिशि जनि, लखहु देखहुँ विरद पुनीत ।
बाल बिहाल बिचार उर, अपनाओ अविगीत ।।
महा तिमिर कुल कूप से काढि कृपा करि आप ।
धाम निवास अचल अभय, दीन्हीं बिगत विलाप ।
पुनि सुवेष सदग्रंथ गति, नाम रमन की चाह ।
इत्यादिक नाना रहस, दीन्हों कृपा अथाह ।।
राउर गुण परमेश ते अधिक, लसत सब भांति ।
गुप्तप्रकट कारण समुझि, बढ़त प्रीती पन कांति ।।
जौ लौं संत सरोज पद कृपा, कटाक्ष न होत ।
तौ लौं अन्तर्गत तिमिर, नशत न प्रगटत जोत ।।
श्री सीतावर वर बदन वरन्यो, संत परत्व ।
युगलानन्यशरण मनन, करत सहज सुचि सत्व ।।
वृथा विगोबहु वेश वपु, विगत सत पद नेह ।
होय हृदय होशियार नित, साजिये संत सनेह ।।
अन्तर्यामी साथ ही सदा, रहत तउ हाय ।
मिटत न संत पद धूरि बिन, कलप कलाप बिहाय ।।
जो चाहे भव तरन को तिमि, सियवर भल भेंट ।
तौ सब आस निरास करि, पद पराग मघिलेट ।।
संत सोइ जिनके सदा, सुमिरत नाम रसाल ।
पलक पड़े पावे नहीं, बिछुरत हाल बिहाल ।।

ऐसे संत उदार जे चहुँ युग, लोक अनन्त ।
तिहूँ काल तिन पद नमो, असद दमन दुतिवन्त ।।
युगलानन्यशरण रच्चो, विनय शतक शुभ रुप ।
पढ़ि सुनि उपजे संत, पद प्रेम नेम रस भूप ।।
तीनों समै सनेह सह जे, जन सतक सनेम ।
पढ़े सुने कछु दिन, अवसि पावे नाम सुप्रेम ।।
संतन की कीरति कलित ललित, सुनत सियलाल ।
और कहो किमि नहिं सुने, समन सकल जगजाल ।।
मान मोह मत्सर मदन कदन, सुयश शुचि सन्त ।
युगलानन्यशरण हृदय, दायक दुति सियकन्त ।।
श्री सरयू तट गुप्त हरि, निकट कपट पट त्यागि ।
सेवो संत प्रसाद से, नाम धाम पन पागि ।।
सरयूतीर सुमध्य दिन प्रतिपद, फागुन मास ।
शुकुल पक्ष शशि दिन, भयो पूरन शतक विलास ।

इति श्रीयुगलानन्दशरण विरचित संत विनय सत

सम्पूर्णम्ः

॥ श्रीजानकीबल्लभो विजयते नमः ॥

॥ आचार्य वन्दना ॥

पूर्वाचार्य जे सहचरी, नित्य धाम वसि हेरिये ।
जनक लड़ैती के प्रिये, मोहि भरोसो तेरिये ॥१
बन्दौं गुरू परमेश, जिनकी महिमा को कहे ।
थके गनेश महेश सारद शेष रमेश युत ॥२
वन्दौं श्री मन्मारुति, जिन सम रसिक न आन ।
दया दृष्टि मोपै करो, दरसावहु रस ज्ञान ॥३
बन्दौं श्री मज्जगद्गुरु, रामानन्द महान ।
रसिकन पंकज के लिए, उदित भानु भगवान ॥४
अनंता नन्दाचार्य जू, प्रनवउँ बारम्बार ।
दया करो दरसै हिये, सिय पिय रूप उदार ॥५
श्री पयहारी पद कमल, बन्दौं बारम्बार ।
चिरजीवी अजहूँ दरस, कीन्ह जगत उपकार ॥६
बन्दौ आग्राचार्य वर, श्री चन्द्रकला अवतार ।
हम दिनन को दीन जो, दुर्लभ रस शृङ्गार ॥७
नाभा अलि पुनि बाल अलि, प्रेम कलि पद ध्याऊँ ।
रस माला श्री रुप सखी, मधुर प्रिया गुन गाऊँ ॥८
राम सखे अरु प्रेम सखी, हरि सहचरी पद बन्दी ।
बन्दौ कृपा निवास पुनि, सुधा मुखि अभिनन्दी ॥
रामचरण सखी युगल प्रिया, रसिक अली रसखान ।
देव सखी वन्दन करौ, दरसाइये रस ज्ञान ॥

बन्दौ हेमलता अलि, प्रीती लता रसि केश।
युगल विहारिणी करु कृपा, सुझै रहस विशेष ॥११
सिया अली ज्ञाना अली, रुप कलाहि धरिध्यान।
राम प्रिया मधुकर अली, करऊँ विमल गुणगान ॥१२
युगल अली पुनि नवल अलि पद सु ध्यान।
प्रेम मोद अरु प्रिया सखी, दीजे रहस निदान ॥१३
सन्त प्रवर सिय भूमि के, बाबा सिद्ध सुनाम।
जिनके भाव ते प्रगट भये, पीय गौर सियश्याम ॥१४
श्रीमती माधुर्य्यलता, महल टहल पर देहु।
आचार्या रसमोद लता, मोहि आपनि करिलेहु ॥१५
प्रेमलता जू के पद कमल, बन्दौं बारम्बार।
श्री सियराम सुशरन जू, पद रज सिर उरधार।१६
बन्दौं श्रीरसकान्तिलता, रसिक शालि रस खानि।
जुगल नाम सुखधाम निरन्तर, रटति रहत मस्तानि।१७
वन्दौं श्री रसरंग लता, सदगुरु जीवन प्रान।
सिय पिय सेवा में निरत, भाविक बड़े सुजान ॥१८
बन्दौं सबके पद कमल, सदा जोरि जुग पानि।
सब मिलि के करिये कृपा, लघु तर किंकरि जानि।१९
गुप्त प्रगट छोटे बड़े, और जे रसिक सुजान।
सबके पद बन्दन करौं, वर दीजै रस ज्ञान ॥२०

इति आचार्य वन्दना सम्पूर्णम्

卐 संक्षेप कवित्त श्रीनामपरत्व 卐

।। कबित्त ।।

मेरो मन कहूँ श्याम सुन्दर सों लागिहै ।। प्रेम मकरन्द पूरि सुपद बिलोकि जानु, जंघ कमनीय कटि आभरन रागिहै । नेहनिधि नाभि नैन निरखि अनूप उर, त्रिवली तरंग बीच जानि अनुरागिहै ।। कंठ कमनीय कल चिबुक कपोल द्विज, वदन बिचित्र बिधु हेरिताप त्यागिहै। (श्री)युगल अनन्य बाम दाम सुसनेह सम, मेरो मन कहूँ श्यामसुन्दर सों लागिहै ।।१।।

सोई सीताराम सों सनेह साँचो किये हैं । जिन्हें जग जाहिर जहर ज्वालमाल लगे, पगे प्रिय पावन परत्व प्रेम पिये हैं।। सीय श्याम सेवा सानुकूल शूलभूल बिना, बिबिध विकार ब्यवहार पीठि दिये हैं । जानकी-जीवन जू को कलित गुनानुबाद, गावत उमंग सजवाय लाह लिये हैं ।। (श्री)युगल अनन्य स्वच्छसार संहितादि मत, सोई सीताराम सों सनेह साँचो किये हैं। २।।

सहस पचीस लों जपत जौन जीह नाम, राम अभिराम ताहि मंगल अवेशेहैं। जाके नेम अचल पचास सहसाधिक है, सो तो देव देविन ते पूजित बिशेषहैं। जौन अनुरागी बड़भागी के सुनेम लक्ष, सो तो परत्यक्ष स्वच्छ रहित अंदेशे हैं । (श्री)युगलअनन्य ताकी महिमा बखाने कौन, जाके सुखसागर की रटन हमेशे हैं ।।३।।

नाम तो अनन्त तामें रामनाम भूप है। नारायण आदि नाम कहे कोटि वार तऊ, तुल्यता न होत नाम बारक अनूप है। और नाम देत भुक्ति मुक्ति बिष्णुलोक लगि, रटे राम नाम देश पावै रसरूप है ।। कीजिये न हठ सठपन छोड़ि दीजे नाम,परम पियूष और मत अन्ध-कूप है। (श्री युगलअनन्य साँच बदत बजाय बात, नाम तो अनन्त तामें राम नाम भूप हैं ।।४।।

और नाम दीपक मशाल तारा शशि सम, राम-नाम सूर शत सहस समान रे। और नाम शिता कंद मधु मीठ मिसरी सों, रामनाम स्वच्छ सुधासार रस-खान रे ।। और नाम तन धन सदृश सोभायमान; राम नाम प्रबल प्रधान पंच प्रधान पंच प्रान रे। [श्री]युगल अनन्य और नाम हैं बराती सम,रामनाम दंपति बिचारु त्यागु मान रे ।।५।।

और नाम अपर मनीन के समान स्वच्छ, राम-नाम चित चिंतामनी चाहि चाह रे। और नाम रैयत दिवान औ वजीर सम,रामनाम अचल अखंड बादशाह रे ।। और नाम शिष्य सद समता सजाये सदा, राम-नाम गुरु गुन अगम अथाह रे। [श्री]युगलअनन्य और नाम दिन चारि प्यार,रामनाम एकरस नित्य निरबाहरे।।६

सहस करोरि बेर द्वारिका प्रयाग जाय, पदुम अनेक वार कासिका विहारहीं। मथुरा अवन्तिका अरब औ खरब वार, मायापुरी कच्छप समान दृग धारहीं ।। जगन्नाथ बदरी केदारनाथ आदि सब, तीरथ सुछेत्र जाय पदुम अपारहीं । [श्री] युगलअनन्य तउ एक वार राम-नाम मुख के उचारे सम कहे पाप भारहीं ।।७।।

ताहि पर वार वार कोटिन तलाक है ।। चारो युग बीच मीच मद को मलनहार, नाम सुखसार तरवार धार धाकहैं। यामें जो मरमधुर धरमधुरीन जन, जानत सुजान जौन दिब्य दिलपाक हैं ।। माया मल मद माँझ मोह्यो जाको चित्त तौन, लखि न सकत नाम महिमा अचाक है। [श्री] युगलअनन्य जाहि रुचत न रामनाम ताहि पर वार-वार कोटिन तलाक है ।।८।।

नाम के रटन बिन छूटत न दाग है । चाहो चारो ओर दौर देखो गौर ज्ञान हीन, दीनता न छीन होय झीन अघ आग है। जहाँ तक साधन सुराधन बिलोकिये जू, बाधन उपाधन सहित नट बाग है ।। तीरथ की आस सो तो नाहक उपास्य हेतु, एक बार राम कहे कोटिन प्रयाग है। [श्री] युगलाअनन्य इत उत भ्रम श्रम दाम, नाम के रटन बिन अछूत न दाग है ।।९।।

॥ सवैया ॥

नाम सजीवन मूरि मनोहर,खाय बिना मृत प्रान न जागे।
सन्त सुसङ्ग सजाय बिना, भ्रम भावना भूत भयान न भागे।
धाम सिरोमनि सेये बिना, सिय वल्लभ रूप सुपाग न पागे।
[श्री]युग्मअनन्य निचोरि सुकोटिन,बैनभन्यो कुछ शेष न आगे

। कवित्त ॥

सीताराम सरस सनेह रसरूप नीर, सरयू सरित शुचि स्वामिनी निहारिये। भागीरथी गावें गुन नर्मदा निहारे नैन, वैन चैन दैन कृष्णवल्लभा बिचारिये॥ कावेरी सु कंज कर लीन्हें पानदान चन्द्रभागा स्वच्छ सुरभि सु भाजन सुधारिये। [श्री] युगलअनन्य लोक निखिल सरित सिंधु. सेवे पद कमल अमल बलिहारिये।

॥ दोहा ॥

सीताराम नाम ही में वेद संहिता पुराण।
ध्यान भावना समाधि सरसतु है॥
सीताराम नाम ही में तत्व भांति योग।
यज्ञ पर व्यूह विभव स्वरूप परसुत है॥
सीताराम नाम ही में पांचौ मुक्ति भुक्ति।
वरदायक विचित्र एक रस दरसुत है॥
श्रीयुगल अनन्य सीताराम नाम ही में।
मोद विशद विनोद वार-वार बरसह हैं॥

प्रकाशित पुस्तकों की सूची—

श्रीसीताराम युगल सहस्रनाम श्रीभुशुण्डि रामायणान्तरगत

१—जानकी विन्दु	श्री देव स्वामीजी
२—द्वादश मास उत्सव	श्रीविदेहजा शरणजी
३—मधुर पदावली	श्रीसिया अलीजी
४—प्रेमरस पदावली	श्रीविदेहजा शरणजी
५—वृहद अष्टयाम पदावली	पूर्वाचार्यों की संग्रह वानी
६—सीताराम वर्षोत्सव	,, ,, ,,
७—रसकान्ति अष्टयाम	,, ,, ,,
८—श्रीसिया सहस्र नाम	श्री सियाशरणजी मधुकर
९—श्रीराम सहस्र नाम	,, ,,
१०—श्रीमिथिला मधुर विलास	पुर्वाचार्यों की वानी

॥ पद ॥

सन्तन चरन धूरि जो पाऊँ।
शीस चढ़ाय लगाय दृगन सों पाय हृदय निज सरस बनाऊँ।
सुरसरि अघ छूटत जिन परसे तिन संतनयश केहि मुख गाऊँ
संत समाज तीर्थ सेवन कर उज्जवल रस सागर अब गाऊँ।
संतन को चरणामृत लै लै उर विच सरिता प्रेम बढ़ाऊँ॥
सन्तोचिष्ढ पाय श्रद्धा सों जनम जनम त्रयताप नसाऊँ।
सन्तन अनुगत ह्वै 'बाँके पिय' संतन की अनुचरी कहाऊँ।
प्रिया प्रीतम निकुंज रस लीला अवलोकन कर नैन सिराऊ

मनीराम प्रिंटिंग प्रेस, शास्त्रीनगर—अयोध्या।